LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future.

शिक्षण का नया पाठ: बच्चों संग टेसू (केशू) बनाने का अनुभव

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखक: अरविन्द कुमार सिंह, प्राथमिक विद्यालय सहायक अध्यापक, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह बच्चों की संस्कृति, परंपरा और जीवन अनुभवों से गहराई से जुड़ा होता है। जब शिक्षक बच्चों की स्थानीय परंपराओं और लोक-कला को कक्षा में स्थान देता है, तो शिक्षा अधिक जीवंत, अर्थपूर्ण और आनंददायक बन जाती है। हाल ही में मुझे ऐसा अवसर मिला जब मैंने बच्चों के साथ मिलकर 'टेसू' या 'केशू' बनाना सीखा।

यह अनुभव मेरे लिए केवल एक शिल्प सीखने भर का अवसर नहीं था, बल्कि इसने मुझे शिक्षा के असली स्वरूप का बोध कराया। मैंने महसूस किया कि शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं होता, बल्कि सीखने की यात्रा में वह भी बच्चों का सहयात्री है।

परंपरा और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

हमारे गाँव में नवरात्रि का विशेष महत्व है। नवरात्रि आने से पहले बच्चे विशेष रूप से 'केशू' और 'झांझी' बनाते हैं। यह पारंपरिक लोककला और खेल का अद्भुत मिश्रण है। बच्चे मिट्टी, पानी और लकड़ी से इन्हें बनाते हैं और फिर मोहल्लों में टोली बनाकर गीत गाते हुए अनाज, मिठाई या पैसे इकट्ठा करते हैं।

यह परंपरा केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामूहिकता, सहयोग, श्रम का महत्व, कला और रचनात्मकता की गहरी झलक भी मिलती है। बच्चों की कल्पना शक्ति और उत्साह इस परंपरा को जीवित रखते हैं।

अनुभव की शुरुआत

पिछले दिनों जब मैं कक्षा में प्रवेश किया, तो देखा कि कुछ बच्चे आपस में किसी बात पर बहस कर रहे थे। मैंने उन्हें पास बुलाकर कारण पूछा। एक छात्रा ने कहा कि एक अन्य छात्र ने मुझे टीचर्स डे पर पुराना पेन दिया था। तभी वह छात्र बोला कि "नहीं सर, मैं आपके लिए नया पेन खरीद कर लाया था।" मैंने उनकी बात को समाप्त करने के लिए कहा कि "मुझे तो वह पेन बहुत पसंद आया है और अभी भी मेरी पॉकेट में रखा है।"
इसके बाद मैंने बच्चों से कई बातें की और उन्हें समझाया कि टीचर्स डे पर जो भी हमें दिया जाता है, वह हमारे लिए बहुत कीमती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन कितना महंगा सामान लाया। आप लोगों ने जो मुझे पत्र और ग्रीटिंग दिए थे, वे सभी मुझे बहुत पसंद आए।

फिर मैंने उन्हें जेसेंटा की डायरी से "**प्रेम के सिवा और कुछ नहीं**" लेख पढ़कर सुनाया। इसमें लिखा है कि "**अभाव, बीमारी, गरीबी और दुख के बीच भी साधारण लोगों ने अपने जीवन में थोड़ा-थोड़ा प्रेम, थोड़ी-थोड़ी आत्मीयता और मानवता बचाकर रखी है। धरती में प्रेम सबसे ताकतवर मूल्य है। यही इंसान के भीतर समर्पण ला सकता है। और यही लालच, हमले, अविश्वास और हिंसा सबको खत्म कर सकता है। इस धरती को प्रेम के सिवा और कुछ नहीं बचा सकता।**" मैंने बच्चों से कहा कि वे आपस में प्रेम से रहें और छोटी-छोटी बातों पर बहस या लड़ाई न करें।

अगले दिन सुबह जब मैं विद्यालय पहुंचा तो अमुख छात्र मेरा इंतजार कर रहा था वह मेरे पास आया और मुझसे बोला कि सर मेरे पास बहुत सारे पैसे थे मैं आपको कई सारे पेन देना भी चाहता था मैं आपके लिए दो पेन खरीद के लेकर आया था और एक अन्य छात्र के पास आपको देने के लिए पेन नहीं था इसलिए मैंने उसे अपना पैन दे दिया और मैं रामलीला देखने के लिए पैसे बचा रहा हूं। मैंने उसे फिर से समझाया कि आपका कक्षा में अच्छे से पढ़ना ही हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है इसलिए आप यह सब बातें मत सोचो| आप सभी कक्षा में मन लगाकर पढ़ते हो यही सब मेरे लिए टीचर्स डे का गिफ्ट है। उसने यह भी बताया कि 22 तारीख से वह सभी टेसू (केशू) और झांझी लेकर घर-घर जाएंगे और वहां से भी पैसे इक्कट्ठे करेंगे लेकिन इन दिनों हो रही लगातार बारिश होने की वजह से वह अभी अपनी टेसू (केशू) नहीं बन पा रहे हैं।

सभी छात्रों के कक्षा में आने के बाद मैंने उनसे पूछा कि इस बार उन्होंने क्या तैयारी कर ली है। सभी ने बताया कि उन्होंने अपनी टोलियाँ बना ली हैं, लेकिन टेसू (केशू) अभी तैयार नहीं हैं। तब मैंने पूछा कि क्या वे मुझे भी टेसू (केशू) बनाना सिखाएंगे। उन्होंने खुशी-खुशी अपनी सहर्ष स्वीकृति दी।

निर्माण की तैयारी

अगले दिन बच्चे मिट्टी, लकड़ी और रस्सी लेकर आए। सबसे पहले हमने मिट्टी को पानी के साथ गूँथ कर तैयार किया।

टेसू बनाने की प्रक्रिया

अब मैंने बच्चों के निर्देशों का पालन करना शुरू किया। सबसे पहले तीन लकड़ी की टहनियों को त्रिकोण की तरह खड़ा किया और ऊपर से मिट्टी लगाकर उन्हें जोड़ा। धीरे-धीरे ढाँचा तैयार हुआ। फिर मिट्टी की परतें चढ़ाकर इसे मजबूत बनाया। बाद में दीपक रखने के लिए जगह बनाई। मेरी पहली कोशिश उतनी सफल नहीं हुई।
फिर मैंने कुछ छात्रों से टेसू (केशू) बनाने को कहा। उन्होंने थोड़ी ही देर में सुंदर टेसू बना दिए। इसके बाद मैंने एक बच्चे के साथ बैठकर फिर प्रयास किया और इस बार बच्चों ने मेरी कमियों को सुधारने में मदद की।

सीखने का आनंद

वास्तव में असली शिक्षा वही है—जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी की भूमिकाएँ बदल जाएँ, और सभी एक-दूसरे से सीखने को तैयार हों। बच्चों के चेहरे पर खुशी और गर्व देखकर मुझे लगा कि इस अनुभव ने उन्हें यह भी सिखाया कि उनका ज्ञान और परंपरा कितनी मूल्यवान है।

शिक्षा में सांस्कृतिक जुड़ाव

इस गतिविधि ने मुझे यह गहराई से समझाया कि जब हम शिक्षा को बच्चों की संस्कृति और परंपरा से जोड़ते हैं, तो उनका जुड़ाव स्वतः बढ़ जाता है। वे सक्रिय हो जाते हैं, आत्मविश्वास से भरे रहते हैं और अपनी संस्कृति साझा करने में गर्व महसूस करते हैं।

सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विकास

- **सहयोग और सहभागिता** – सभी बच्चे मिलकर काम करते हैं।
- **धैर्य और श्रम का महत्व** – मिट्टी गूंथने और आकार देने में धैर्य की आवश्यकता होती है।
- **सामूहिकता और उत्सवधर्मिता** – गीत गाना, टोली बनाना और घर-घर जाना उन्हें सामूहिक जीवन का महत्व सिखाता है।
- **रचनात्मकता और कला** – मिट्टी से आकार गढ़ना बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ाता है।

निष्कर्ष

टेसू बनाना भले ही एक छोटा-सा कौशल लगे, लेकिन मेरे लिए यह एक गहरी सीख थी। बच्चों से सीखते हुए मैंने महसूस किया कि शिक्षा का वास्तविक स्वरूप 'साझा सीखना' है। एक सहायक अध्यापक के रूप में अक्सर मैं सोचता हूँ कि कक्षा में बच्चों को सक्रिय कैसे बनाया जाए, लेकिन आज बच्चों ने मुझे सक्रिय कर दिया। वे शिक्षक बने और मैं विद्यार्थी। यह अनुभव न केवल मेरे अध्यापन को सार्थक बनाता है, बल्कि मेरे शिक्षक जीवन को भी समृद्ध करता है। बच्चों के गर्व से भरे चेहरे और उनकी संस्कृति की जीवंतता मेरे लिए सबसे बड़ी प्रेरणा हैं। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि सीखने और सिखाने की यह स्वर्णिम यात्रा ऐसे ही गतिमान रहेगी।

लेखक परिचय:

अरविन्द कुमार सिंह के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी जनपद बुलंदशहर उत्तर प्रदेश में पिछले 9 वर्षों से सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत है। अरविन्द कुमार सिंह LLF के नौ माह कोर्स के पूर्व प्रतिभागी भी है। इसके साथ ही उनके विद्यालय के छात्र-छात्राएं पिछले 3 वर्षों से उड़ान नाम की दीवार पत्रिका बना रहे हैं साथ ही छात्र-छात्राओं के लिए कविता, कहानी, चित्र और लेख बाल विज्ञान पत्रिका चकमक में लगातार प्रकाशित होते रहते हैं। इनके विद्यालय के छात्रों द्वारा बनाया गया टाइमलाइन कैलेंडर को SCERT राजस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हवा महल पत्रिका में चुका है। इनके कक्षा अनुभव लगातार विभिन्न पत्रिका एवं वेबपोर्टल पर प्रकाशित होते रहते है।